इकाई 13 मध्य एशिया और तुर्कों और मंगोलों का उदय

इकाई की रूपरेखा

13.0 उद्देश्य

तुर्कों और मंगोलों का उदय, दसवीं और तेरहवीं शताब्दी के बीच मध्य एशिया और उसके आसपास के क्षेत्रों पर उनकी तेजी से होने वाली विजयें और विस्तार इतिहास के एक महत्वपूर्ण दौर की शुरुआत करने वाली उल्लेखनीय घटनाएँ हैं। भारत के लिये इसके परिणाम सीधे-सीधे स्पष्ट और दूरगामी रहे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- यह जान पायेंगे कि तुर्क और मंगोल कौन थे और इतिहास के एक रोमांचक दौर में उनकी भूमिका वास्तव में क्या थी,
- ऐतिहासिक दृष्टि से एक महत्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में मध्य एशिया की कुछ विशेषताओं और उसके भूगोल की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे, और
- राजनीतिक और सामाजिक विकास के एक व्यापक ऐतिहासिक संदर्भ में मध्यकालीन भारत का स्थान समझ सकेंगे।

13.1 प्रस्तावना

दसवीं शताब्दी में एशिया महाद्वीप के पूर्वी अंचलों में रहने वाली एक लड़ाकू खानाबदोश कौम का पश्चिम की ओर गमन देखने में आया। वे लहर पर लहर की तरह आये, उनका हरेक आक्रमण पहले के आक्रमण से कहीं अधिक शक्तिशाली और विस्तृत था। बहुत कम समय में ही, बर्बर झुंडों ने मध्य और पश्चिम एशिया के कभी सम्पन्न रहे साम्राज्यों और राज्यों को ध्वस्त कर दिया, वे भूमध्य सागर और काले सागर के तटों तक जा पहुंचे। दसवीं और बारहवीं शताब्दी के बीच आक्रमण करने वाले मुख्य तौर पर "तुर्क" थे, तेरहवीं और पंद्रहवीं शताब्दी के बीच के आक्रमणों में तुर्कों की तरह की ही, लेकिन उनसे कहीं अधिक भयंकर कौम शामिल थी – ये मंगोल थे।

इन कौमों के इन अभियानों से भारी तबाही हुई। विशेष तौर पर मंगोलों ने अधिक तबाही की। जहाँ कहीं उनके आगे बढ़ने का प्रतिरोध किया गया वहीं वे खून की धारा और निर्मम नरसंहार के निशान छोड़ गये। लेकिन इन आक्रमणकारियों ने जिन सभ्यताओं पर विजय हासिल की, उन्हीं सभ्यताओं ने अंत में उन्हें संयत कर दिया। वे जीते हुए क्षेत्रों में आ बसे, और इसके

परिणामस्वरूप उनके और उनके नये परिवेशों के बीच जो मिलन हुआ उसने एक नयी व्यवस्था की बुनियाद रखी। दसवीं शताब्दी के अंत में महमूद गज़नवी के भारत पर आक्रमण, और कोई दो सौ साल बाद ही भारत पर गौरी के आक्रमण इन व्यापक खानाबदोशी अभियानों के दूरगामी रूप थे (गज़नी और गौर दोनों अफगानिस्तान में हैं)। जैसा एशिया के दूसरे हिस्सों में हुआ, भारत में तुर्कों के आक्रमण के परिणामस्वरूप तेरहवीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों में दिल्ली सल्तनत नामक एक स्वाधीन राजनीतिक सत्ता का निर्माण हुआ। दिल्ली सल्तनत शब्द से दिल्ली में तुर्कों की राजधानी से उत्तरी भारत के बड़े हिस्सों पर उनके राज्य का पता चलता है। दिल्ली सल्तनत दो सौ वर्षों से अधिक समय तक अस्तित्व में रही। इस बीच उसने नयी राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक संस्थाओं को जन्म दिया। ये संस्थाएँ पहले से विद्यमान संस्थाओं से बहुत भिन्न थीं।

दरअसल तुर्क अपने साथ जो कुछ लेकर आये थे और जो कुछ भारत में उन्होंने पाया, ये संस्थाएँ, उनका मिश्रण थीं, यही बात दिल्ली सल्तनत के बाद आने वाले मुगल साम्राज्य के लिये भी कही जा सकती है।

इस इकाई में हम मध्य एशिया में तुर्कों और मंगोलों के उदय के परिणामस्वरूप होने वाले विकासों पर विहंगम दृष्टि डालेंगे।

13.2 मध्य एशिया

तुर्कों और मंगोलों के उदय पर चर्चा करने से पहले, यह आवश्यक है कि हम मध्य एशिया में आने वाले क्षेत्रों की एक मानसिक तस्वीर बनायें और उनकी कुछ उल्लेखनीय विशेषताओं की जानकारी हासिल करें। "मध्य एशिया" एक शिथिल या अस्पष्ट भौगोलिक शब्द है। इसमें एक विशाल और विविध क्षेत्र आता है जिसके दक्षिण में पहाड़ों की एक विराट शृंखला है, जिसका एक हिस्सा हिमालय है। इसकी उत्तरी सीमाएँ यूराल की पर्वत शृंखला के आसपास पहुँचती हैं। पश्चिमी सीमाएँ यूराल तथा केस्पियन सागर तक तथा पूर्वी सीमा बलकश और बैकल झीलों के बीच के क्षेत्र में संभवतः इरतिश नदी तक (देखें मानचित्र 1)।

एक क्षेत्र के नाम के रूप में मध्य एशिया का कम से कम एक प्रतिद्वंदी है— तुर्किस्तान। तुर्किस्तान का भौगोलिक विस्तार तो मध्य एशिया की तरह नहीं है, लेकिन उसमें मध्य एशिया में आने वाले क्षेत्रों का एक बहुत बड़ा हिस्सा आ जाता है। शायद यह एक ऐसे क्षेत्र का कहीं सटीक विवरण देता है जिसकी आबादी में तुर्कों की प्रधानता है। लेकिन, जब इस शब्द का प्रयोग ऐतिहासिक संदर्भ में किया जाये, तो यह याद रखना चाहिये कि तुर्किस्तान एक जातिनाम है : यह एक जातीय क्षेत्र और एक मानस समुदाय को व्यक्त करता है। दोनों ही मामलों में, जो बदलाव इन शताब्दियों में आये वे गहरे रहे हैं। तुर्किस्तान की भौतिक और मानवीय दोनों सीमाएँ बारी-बारी से परिवर्तित हुई हैं, सिकुड़ी हैं और फैली हैं : यह शायद हमारे अपने समय तक होता रहा है जब आधुनिक राज्यों ने अपेक्षाकृत स्थिर सीमाएँ और आबादियाँ हासिल की हैं। आधुनिक राजनीतिक सीमाओं के अर्थ में, इसमें सोवियत समाजवादी गणराज्य तजकिस्तान, उजबेकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, किर्घीजिया और चीनी तुर्किस्तान आ जाते हैं।

13.2.1 मध्य एशिया : विस्तृत विवरण

जब हम मध्य एशिया की विशिष्ट प्राकृतिक विशेषताओं पर ध्यान केन्द्रित करते हैं तो, अत्यन्त जटिलता वाला एक क्षेत्र हमारे सामने आता है। यह पहाड़ों, रेगिस्तानों, नखलिस्तानों, घासस्थलों और नदी घाटियों की एक असाधारण पच्चीकारी दिखायी देती है। पहाड़ी तलहटियों और घाटियों में नखलिस्तान, अर्थात रेगिस्तान से घिरे उपजाऊ वनस्पतिदार द्वीप, मिलते है। रेगिस्तानों के पार मिलते हैं घासस्थल—शुष्क और अनियमित वनस्पति के असीम विस्तार। उत्तर और पूर्व की ओर घासस्थल एक बार फिर विशाल साइबेरियाई रेगिस्तान में लुप्त हो जाते हैं। जैसा कि हम आगे देखेंगे, घासस्थल मध्य एशिया के और निस्संदेह दुनिया के भी इतिहास का मार्ग तय करने में निर्णायक रहे हैं। क्योंकि कम से कम कुछ हजार वर्षों तक घासस्थलीय पर्यावरण केवल एक तरह की ज़िंदगी को सहारा दे सका—खानाबदोश ज़िंदगी को, आवासीय ज़िंदगी को, नहीं।

इसके विपरीत, नखलिस्तानों ने स्थायी अस्तित्व को बढ़ावा दिया। मध्य एशिया में सभ्य समुदायों का इतिहास कम से कम कुछ हज़ार वर्ष पुराना है। शांति के दौर, जो सीमाओं पर बर्बरों की गतिविधियों से लगातार टूटते रहते थे, ने सिंचाई कार्यों और खेती के विस्तार को जन्म दिया। व्यापार और दस्तकारियों के विकास के साथ कस्बे अस्तित्व में आये। उन्होंने साथ-साथ वे

मध्य एशिया
10th-11th C.
अराल सागर
किज़िल कूम रेगिस्तान
फरगाना
ख्वारिज़्म
ट्रांसआक्सियाना
सीर दरिया
कैस्पियन सागर
बुखारा
समरकन्द
सोगदिया
ज़रफशान
करा कूम रेगिस्तान
ऐत्रैक
ऑक्सस
मर्व
दन्दानकान
तबरिस्तान
खुरासान
बदख्शां
दमघान
निशापुर
कुमिस
काबुल
गौर
हिरात
अफगानिस्तान
गज़ना
गार्डिज़
सिन्धु
दश्त-ए लूत
सीसतान
जरंग
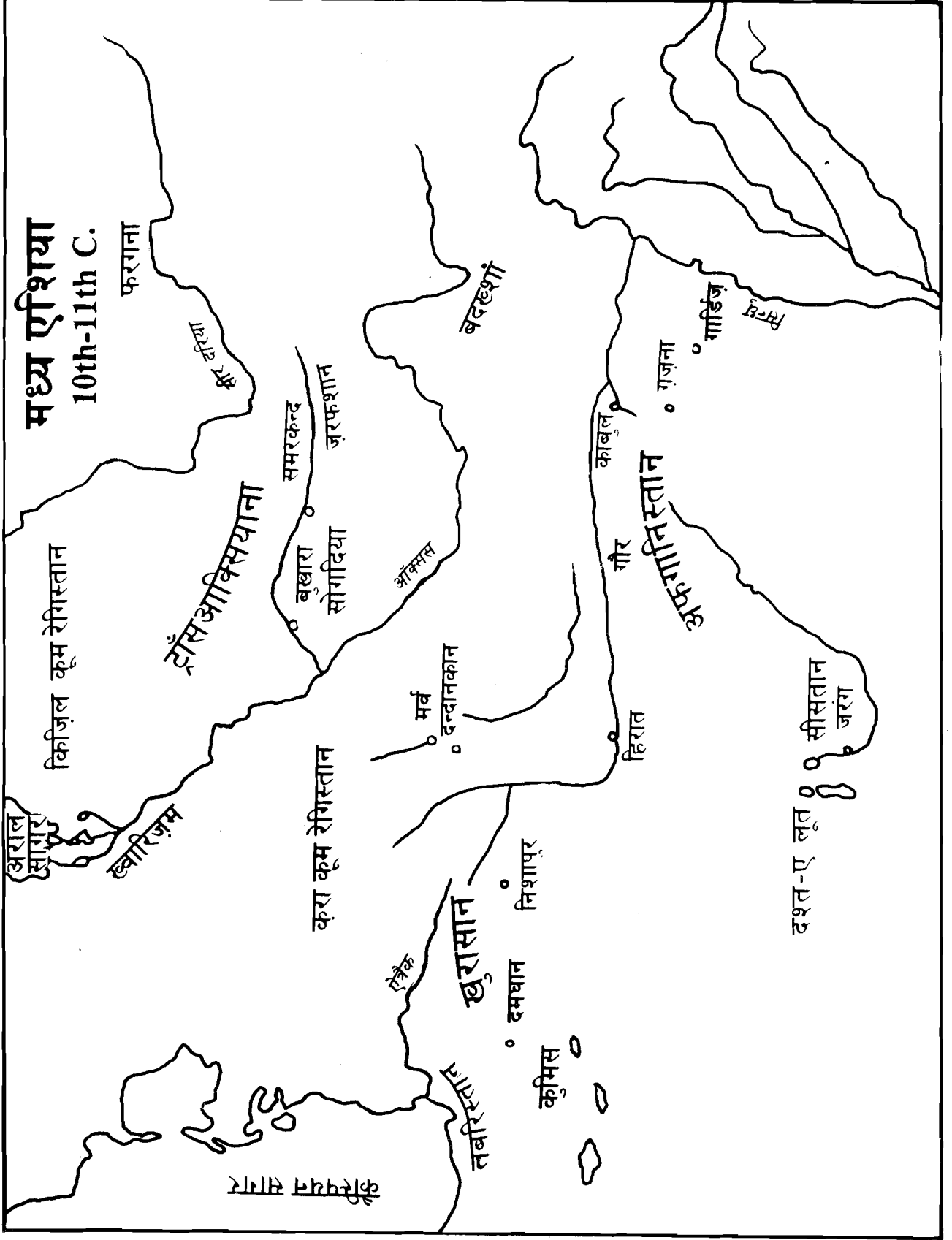
स्थितियाँ बनायीं जिससे हरे-भरे शहरों और राज्यों को पनपने में मदद मिली। इस तरह नखलिस्तान रेगिस्तानों और घासस्थलों की प्रधानता के वास्तव में पूरक थे। उनके कारण मध्य एशिया, भारत, चीन, मैसोपोटेमिया और यूरोप की दूर-दूर छिटकी सभ्यताओं को जोड़ने वाले एक व्यापारिक मार्ग के केन्द्रीय बिन्दु के रूप में उभर सका। आगे इस बारे में हम और बतायेंगे।

13.2.2 मध्य एशिया : लघु क्षेत्रों का जमाव

एक और स्तर पर मध्य एशिया को स्पष्ट छोटे-छोटे क्षेत्रों का बना हुआ देखा जा सकता है, अर्थात् ऐसी क्षेत्रीय इकाइयाँ जिनकी पहचान भूगोल और इतिहास के एक विचित्र मिश्रण की देन है। ख्वारिज्म, खुरासान, ट्रांस ऑक्सियाना, सोगदियाना, सेमीरेचेया, फरगना—ये कछ नाम हैं जो आपको इस क्षेत्र के किसी भी ऐतिहासिक विवरण में बार-बार पढ़ने को मिलेंगे। इनमें से अधिकाँश क्षेत्र मानचित्र पर चिन्हित हैं :

ट्रांस ऑक्सियाना (ऑक्सस के पार की भूमि) क्षेत्र ऑक्सस और जैक्सार्टस नदियों द्वारा बनाया हुआ क्षेत्र है। (इन नदियों को अमु दरिया और सीर दरिया भी कहते हैं)। ये नदियाँ अंतभौमिक अराल सागर में आकर गिरती हैं और मध्य एशिया की दो सबसे महत्वपूर्ण नदियाँ हैं। आठवीं शताब्दी में ट्रांस ऑक्सियाना को जीतने वाले अरबों ने इसे **'मवारउन नहर'** का नाम दिया था जिसका अर्थ होता है "वह जो नदी के पार है"। ऑक्सस-जैक्सार्टस खाड़ी के बीच से होकर जरफशान नदी बहती है, जिसके प्राचीन नाम "सोख्द" पर यह क्षेत्र "सोख्दियाना" कहलाया। मध्य एशिया के दो सबसे मशहूर शहर, समरकंद और बुखारा, इसी क्षेत्र में पड़ते हैं।

अराल सागर के दक्षिण में, ऑक्सस के उपजाऊ डेल्टा के आसपास, **ख्वारिज्म** (आधुनिक खिवा)के नाम से जाना जाने वाला क्षेत्र है। यहाँ ई.पू. सातवीं या छठवीं शताब्दी में ही एक विशाल केन्द्रीकृत राज्य अस्तित्व में आया जो कुछ शताब्दियों तक रहा। पहली शताब्दी ई० के अंत में, ख्वारिज़्म उस विशाल कुषाण साम्राज्य का हिस्सा बन गया जिसने हिंदुकुश पर अधिकार कर लिया था और पूरे उत्तर भारत को अपने में समेट लिया था। इसके परिणामस्वरूप भारत और मध्य एशिया के बीच सांस्कृतिक संपर्कों में बहुत मजबूती आयी।

ट्रांस ऑक्सियाना के पश्चिम में **खुरासान** का क्षेत्र शुरू होता है। यह एक स्थल रूद्ध क्षेत्र है, जिसका समुद्र से कोई संपर्क नहीं है। इसकी नदियाँ झीलों और दलदलों में जाकर समाप्त हो जाती हैं। लेकिन इसके नखलिस्तानों के आसपास बेहतरीन चरागाह बहुतायत में मिलते हैं। इन चरागाहों ने बारंबार खानाबदोशों को आकृष्ट किया है कि वे यूरेशियाई घासस्थलों से मध्य एशिया में आकर निकलने वाले ढलावदार पहाड़ों के पार से इसकी घाटियों में उतरें। "लोगों के इस तरह के आवागमन के कारण खुरासान अनिवार्य रूप से एक युद्ध स्थली बना गया…"। अरबों ने इसका इस्तेमाल मध्य एशिया को जीतने के लिए एक अड्डे के रूप में किया।

जैक्सार्टस के पूर्व में, इसके मध्य खंड के सहारे फरगना घाटी है— जो भारत के पहले मुगल शासक, बाबर का पुश्तैनी घर है। ई.पू. 102 में ही चीनियों ने फरगना पर अधिकार कर लिया था, इसके बाद मध्य एशिया पर चीनी प्रभाव एक स्थायी कारक बना रहा।

बोध प्रश्न 1

1) मध्य एशिया की मुख्य भौगोलिक विशेषताएँ बताइये।

....

....

....

....

....

....

....

2) मध्य एशिया के कुछ लघु क्षेत्रों के नाम और उनका भौगोलिक विस्तार बताइये।

....

....

....

3) तुर्किस्तान क्षेत्र के बारे में पाँच पंक्तियों में लिखिये।

....

....

....

....

....

13.3 चरागाही खानाबदोश

तुर्क और मंगोल उन घासस्थलों और रेगिस्तानों की पैदाइश थे जो मध्य एशिया को, ट्रांस ऑक्सियाना के उत्तर और पूर्व के एक विशाल क्षेत्र में घेरे हुए हैं। और स्पष्ट कहा जाये तो, वे उन खानाबदोशों के वंशज थे जो बैकल झील के दक्षिण में अलताई पहाड़ों के क्षेत्र में घूमते थे। ये क्षेत्र अब बाहरी मंगोलिया का हिस्सा है। उनकी एक आदिम गतिशील सभ्यता थी जिसका आधार आदिवासी संगठन और मवेशियों, भेड़ों और घोड़ों का स्वामित्व थे। इसके अलावा, इन आदिवासियों के पास अक्सर ऊंट, खच्चर और गधे भी होते थे। ये जानवर ही खानाबदोशों की भोजन, कपड़ा और बसेरे जैसी बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन थे। दूध और माँस से उन्हें पोषण मिलता था। जानवरों की खाल का इस्तेमाल कपड़े के तौर पर, और उन तंबुओं **(युर्तों)** को बनाने के लिये भी होता था जिनमें ये खानाबदोश रहते थे।

चरागाही खानाबदोशी का आधार चरागाही भूमियों की तलाश थी। इस तलाश में ये खानाबदोश **अपने मवेशियों** और जानवरों के साथ लगातार एक जगह से दूसरी जगह भटकते रहते थे। खानाबदोश का खेती या स्थायी निवास से कोई संबंध नहीं था इसलिए भूमि के साथ इनका लगाव भी नहीं के बराबर था। यह तभी तक रहता था जब तक उस भूमि से उन्हें अपने जानवरों के लिये चारा मिलता रहता था। जब ये घुमक्कड़ खानाबदोश कहीं खेमा लगाते थे तो हरेक तंबू या गृहस्थी को उसके अपने इस्तेमाल के लिए भूमि का एक टुकड़ा दे दिया जाता था। जब एक क्षेत्र का पूरी तरह उपयोग कर लेते थे तो ये आदिवासी नये चरागाहों की तलाश में कूच कर जाते थे।

इस तरह गतिशीलता खानाबदोश समाज का मुख्य गुण था, और घोड़ा उसकी सबसे असाधारण अथवा महत्वपूर्ण संपत्ति। चरागाही खानाबदोशों के एक विवरण में उन्हें एक ऐसी कौम बताया गया है जिनका देश उनके घोड़े की पीठ पर था। इसके परिणामस्वरूप, उदाहरण के लिये, मंगोलों में, घोड़ा चुराने से बड़ा और कोई अपराध नहीं माना जाता था। इसकी सज़ा मौत होती थी। घुड़सवारी और धनुर्विद्या में निपुणता के कारण ये खानाबदोश एक जबरदस्त जंगी ताकत थे। मंगोल इस कला में तेरहवीं शताब्दी में पूर्ण सिद्धहस्त हो गये। पूरी रफ्तार में घोड़ा दौड़ाते हुए वे आगे पीछे, दांए-बांए, हर दिशा में सटीक निशाना लगाते हुए बाणों की वर्षा कर सकते थे।

इस कला को परखने और उसमें महारत हासिल करने के मौके घासस्थलों के परिवेश में बहुत मिले जहाँ चरागाहों को लेकर होने वाले टकराव आम घटनाएँ थीं। ये टकराव बढ़ते-बढ़ते खूनी लड़ाइयाँ भी बन जाते थे।

लेकिन स्थायी (आवास वाले) क्षेत्रों में खानाबदोशों के आक्रमण की सभी घटनाओं को घासस्थलों के अंदर होने वाले टकरावों का परिणाम मात्र समझना इसकी जटिलता को अनदेखा करना होगा। इन आक्रमणों के लिये चरागाही अर्थव्यवस्था के पर्याप्त न होने को भी उतना ही श्रेय देना होगा। चरागाहों से खानाबदोशों की अधिकांश बुनियादी आवश्यकताएँ तो पूरी हो जाती थीं, विशेष तौर पर तब जब शिकार या मछली मारना भी इनके साथ चलता था, लेकिन इसमें एक गंभीर कमी थी : इससे कोई स्थायी भंडार नहीं मिलते थे, जैसा कि इसके विपरीत कृषि में होता है। चरागाहों की उपज तेजी से खत्म कर ली जाती थी। इसलिये, खानाबदोश का आग्रह इस बात पर होता था कि वे न केवल अधिक और बेहतर चरागाही भूमि पर बल्कि खेतिहर समुदायों के उत्पादनों पर

भी कब्जा करें। चरागाही व्यवस्था अपने स्वभाव के ही कारण एक "मिश्रित अर्थव्यवस्था" की ओर मुड़ गयी। इसे व्यापार, मित्रता या आक्रमणों के जरिये हासिल किया गया।

13.4 सभ्यता और तुर्की खानाबदोश : प्रारंभिक संपर्क

प्राचीन मतानुसार सभ्यता और बर्बरता के बीच स्पष्ट विभाजन रेखा ऑक्सस ने खींची। इस मत को दसवीं शताब्दी में महमूद गज़नवी के दरबार के मशहूर शायर फिरदौसी ने भी अभिव्यक्ति दी। अपने "**शाहनामा**" में फिरदौसी ने ईरान और तूरान के दो संसारों की कठोर विरोधात्मकता को इस तरह पेश किया है : "दो तत्व आग और पानी जो दिल की गहराइयों में एक दूसरे के विरुद्ध फटे पड़ते हैं।" फिरदौसी के लिये, ईरान तुर्कों का, बर्बरता का, राज्य था। दो विपरीत जीवन शैलियों से पैदा होने वाली एक स्वाभाविक बैर भावना ने इन दो जातीय समूहों को अलग किया हुआ था।

वैसे अगर ऑक्सस क्षेत्रों पर निकट दृष्टि डाली जाये तो यह बात सामने आती है कि दसवीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में तुर्कों के आक्रमण होने से पहले ये दोनों संसार एक दूसरे के घनिष्ठ संपर्क में रहे थे। वैसे तो ऑक्सस खानाबदोशों के अतिक्रमणों के खिलाफ ऐतिहासिक गढ़ रहा था, फिर भी खानाबदोशों ने इस गढ़ को, हिंसक टकरावों के दौरान ही नहीं, बल्कि शांति के दौरों में भी बार-बार तोड़ा। कठोर और स्पष्ट होना तो दूर, दसवीं शताब्दी आते-आते तो यह सीमा बहुत धुंधली या अस्पष्ट हो चुकी थी।

13.4.1 तिउकिउ साम्राज्य

सभ्यता और तुर्क खानाबदोशों के बीच पहला संपर्क छठवीं शताब्दी के मध्य में उस समय हुआ जब चीन की सीमाओं से बाइजेंटियम तक फैला एक खानाबदोशी साम्राज्य अस्तित्व में आया। तिउकिउ साम्राज्य के नाम से मशहूर यह साम्राज्य वास्तव में तोगुज-ओगुज कहलाने वाली एक कौम के बाईस कबीलों का एक संघ था। यह साम्राज्य कोई दो सौ सालों तक बना रहा। आने वाली तीन शताब्दियों के दौरान, मध्य एशिया में तिउकिउ साम्राज्य के राज्यों का इसमें रहने वाले कबीलों और दूसरे नवागंतुक तुर्की खानाबदोशों के बीच बार-बार बंटवारा हुआ। ओगुज के भटके हुए तत्व दो शताब्दी पहले ही ऊपर ऑक्सस के क्षेत्र में घुस चुके थे। आठवीं शताब्दी में जो झुंड ओगुज के पार कूच कर गये थे वे "मुसलमान लेखकों के क्षेत्र में" आ पहुंचे। दसवीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में जो "तुर्क" और "तुर्कमान" शब्द प्रचलन में आये, उनका इस्तेमाल शुरुआत में इन्हीं लेखकों ने ओगुज आदिवासियों के लिये किया था। धीरे-धीरे इनका इस्तेमाल आम तुर्की खानाबदोशों के लिये शायद ओगुज की जातीय पहचान के धीरे-धीरे कमजोर होने के कारण होने लगा क्योंकि कबीले या तो बड़े संघ से टूट कर अलग हो गये या नये कबीले हारने के बाद इसमें मिला लिये गये।

13.4.2 दो प्रकार के संपर्क

तुर्कों और स्थायी आवास वाले लोगों के बीच संपर्क ने दो प्रमुख रूप धारण किये : (I) सैनिक टकराव, और (II) व्यापारिक लेन-देन। दोनों ही स्थितियों का परिणाम आपसी आत्मसातीकरण और संस्कृति संक्रमण के रूप में सामने आया। पहले हम सैनिक टकराव पर चर्चा करेंगे।

खानाबदोशों की स्वाभाविक प्रवृत्ति थी ऑक्सस के दक्षिण में स्थायी आवास वाले क्षेत्रों में छापे मारना। इन आक्रमणों से बचने के लिए पश्चिम एशिया के राज्यों ने एक सक्रिय प्रतिरक्षा नीति बनायी जिसका केन्द्र पूर्व से होने वाले आक्रमणों का प्रमुख ठहराव क्षेत्र ट्रांस ऑक्सियाना था। छठवीं शताब्दी में ईराक और फारस के सासानिद शासक इस अभियान के वाहक थे। आठवीं शताब्दी में यह काम अरबों ने किया। ट्रांस ऑक्सियाना में घुसने और जैक्सार्टस के पूर्व में एक खासी बड़ी तुर्की आबादी को भगा देने के बाद, अरबों ने सीमा पर मजबूत दीवारों और **रबातों** (सुरक्षा के उद्देश्य से बनी छोटी पक्की इमारतें) का निर्माण किया जिन पर सेना के पहरेदार (गार्ड) लगाये गये। मुस्लिम और तुर्की दोनों की ओर की सीमाओं पर गार्डों की बस्तियाँ बन गयीं। मुस्लिम पक्ष में इन गार्डों को **गाज़ी** कहा जाता था, अर्थात् वे लोग जिनका काम काफिरों के झुंडों से धर्म की रक्षा करना था। शत्रु खेमों के होते हुए भी दोनों गुट एक ही तरह की सीमांत जिंदगी जीने लग गये। उन्होंने एक दूसरे के हथियारों, युक्तियों और जीवन शैलियों को अपना लिया और धीरे-धीरे एक सामान्य सीमांत सैनिक समाज का गठन कर लिया। जिन समाजों

से वे थे और जिनकी वे रक्षा कर रहे थे, यह समाज उन समाजों के समान कम था और इन लोगों के समान अधिक था।

ट्रांस ऑक्सियाना में जब आठवीं शताब्दी में अरबों का कब्ज़ा हुआ उस समय तक तुर्क और गैर-तुर्क का अंतर लगभग मिट चुका था। आंतरिक गड़बड़ियों के कारण ट्रांस ऑक्सियाना के नेताओं को अक्सर तुर्की व्यापारियों को एक संतुलनकारी शक्ति के रूप में दर्ज करना पड़ा था। कम से कम एक विवरण में तो यह जानने को मिलता ही है कि बुखारा नखलिस्तान में सबसे पहले बसने वाले लोग तुर्किस्तान से आये थे।

दूसरे प्रकार का संपर्क व्यापार और वाणिज्य के माध्यम से स्थापित हुआ। एक खानाबदोश साम्राज्य के केन्द्र ने सौदागरों को हमेशा ही आकृष्ट किया है क्योंकि उनके पास स्थायी बस्तियों के उत्पादनों के लिये एक तैयार बाजार उपलब्ध रहा। तिउकिउ साम्राज्य के मामलों मे, यह आकर्षण और भी स्पष्ट था क्योंकि यह विशाल सिल्क मार्ग के पार पड़ता था, जो अंतर्राष्ट्रीय वाणिज्य का प्रमुख मार्ग था। इन सामग्रियों में से अधिकांश प्रति दिन के प्रयोग की थीं, जैसे चमड़ा, खालें, चर्बी, मोम और शहद। लेकिन उनमें रोएंदार खालें (फर) जैसी ऐश की वस्तुएँ भी थीं। इसके अलावा गुलामों का नियमित व्यापार भी होता था जो घासस्थलों से लाये गये होते थे। इन उत्तरी क्षेत्रों से भोजन सामग्रियाँ कारवां के मार्ग पर पड़ने वाले खुरासानी कस्बों में पहुंचती थीं और अंत में ये, पारगमन व्यापार से होते हुए, पश्चिम एशिया में उपभोग के सर्वोच्च केन्द्रों, ईराक और बगदाद में आती थीं।

दसवीं शताब्दी के विवरणों में तुर्कों के कई स्थायी आवासों के सीर दरिया के निचले क्षेत्र में होने का हवाला मिलता है जिसके निवासी "विशुद्ध रूप से खानाबदोश नहीं थे, बल्कि मवेशी पालने वाले, मछली मारने वाले और खेती-बाड़ी करने वाले भी थे"। इनमें से अधिकांश तुर्क उस ओगुज समूह से निकले थे जिसके नेतृत्व में तुर्क मध्य और पश्चिम एशिया के शासक बन कर उभरे थे।

बोध प्रश्न 2

1) मध्य एशिया के लोगों की खानाबदोश जिंदगी की मुख्य विशेषताओं को संक्षेप में लिखिये।

....
....
....
....
....
....
....

2) तिउकिउ साम्राज्य के बारे में पाँच पंक्तियों में लिखिये।

....
....
....
....
....

3) तुर्कों और स्थायी आवास वाले लोगों के बीच व्यापार की मुख्य वस्तुओं की चर्चा कीजिये। उन्होंने किस व्यापार मार्ग का इस्तेमाल किया?

....
....
....
....
....
....
....

13.5 तुर्की आक्रमण

तुर्क मध्य एशिया के सभ्य हिस्सों में न केवल जाने-माने, स्थायी आवास वाले या व्यापारिक क्षेत्र में ही सक्रिय थे, बल्कि कई मौकों पर तो वे विद्यमान सैनिक प्रशासनिक तंत्र में बहुत प्रभावशाली पदों पर भी रहे। इस्लाम के पूर्व के ट्रांस ऑक्सियाना के वर्चस्वशाली सामाजिक वर्गों, **"दिहकानों"** (छोटे भूस्वामियों) और सौदागरों ने तुर्की व्यापारियों का अधिकाधिक इस्तेमाल अपनी पैतृक संपत्ति की रक्षा करने और उसे बढ़ाने के लिये एक दबाव डालने वाले माध्यम के रूप में किया था।

आठवीं शताब्दी के आरंभ में ट्रांस ऑक्सियाना को जीतने वाले अरबों ने तुर्कों को जैक्सार्टस के पार खदेड़ दिया, और मवारउन नहर को बर्बरों के हमलों के खिलाफ एक ढाल के रूप में परिवर्तित कर दिया। लेकिन, अंत में तुर्कों को सिपाहियों के रूप में नियुक्त करने के विचार से अरब भी प्रभावित हुए बिना नहीं रहे। कठोर घासस्थलीय पृष्ठभूमि तुर्कों को एक सहज योद्धा बनाती थी। प्रशिक्षण और अनुशासन के द्वारा उन्हें अव्वल दर्जे की जंगी मशीन (योद्धा) बनाया जा सकता था। इसके अलावा, उन्हें किसी और आवश्यक वस्तु की तरह खरीदा भी जा सकता था। ट्रांस ऑक्सियाना में और उसके आसपास के बाजारों में मध्य एशिया के घासस्थलों और मवारउन नहर के उत्तर में पड़ने वाले मैदानों से पकड़कर लाये गये गुलामों की भरमार रहती थी।

उमय्यदों (661-750 ई०) के तहत सेना में भर्ती लगभग पूरी तौर पर अरबों तक सीमित थी। 750 ई० में उमय्यदों की जगह पर अब्बासिदों के आ जाने के बाद सेना में अरबों का एकाधिकार जाता रहा। ऐसा विशेष तौर पर खलीफा हारून-अल रशीद के शासन के बाद के दशकों में हुआ, जिसकी मृत्यु 809 ई० में हुई। इस अंतिम महान् खलीफा के बेटों और उत्तराधिकारी के बीच होने वाले गृह युद्धों ने अब्बासिद साम्राज्य की बुनियाद हिला कर रख दी। इन परिस्थितियों में, विदेशी मूल के व्यापारियों को भर्ती करना, जो साम्राज्य के आंतरिक मामलों में लिप्त नहीं थे, एक मात्र जवाब दिखायी पड़ता था।

खलीफा मुतास्सिम (833-842 ई०) अपने आसपास तुर्की गुलामों का एक बड़ा लश्कर रखने वाला और उसे अपनी सेनाओं का आधार बनाने वाला पहला शासक था। उन्हें एक स्पष्ट और अलग पहचान देने के लिए तुर्की सेना को स्वदेशी लोगों से काफी दूर रखा जाता था और उन्हें केवल अपने ही मूल की स्त्रियों से विवाह की अनुमति थी। "इस तरह उसने एक ऐसा सैनिक वर्ग खड़ा किया जिसका काम महल के झगड़ों में या किसी राजनीतिक अथवा धार्मिक आंतरिक झगड़ों में हिस्सा लिये बिना खलीफा और राज्य की रक्षा करना था। लेकिन हुआ इसका उल्टा। राज्य के संचालन में इस वर्ग का हस्तक्षेप इस सीमा तक बढ़ गया कि वह अधिकाधिक विनाशकारी होता गया क्योंकि गार्ड के अधिकारी विभिन्न दावेदारों का समर्थन करने वाले प्रतिद्वंद्वी वंशों में बंट गये और ऐसा करने के लिये वे महल में विद्रोह भड़काने से भी नहीं हिचकिचाये।"

अब्बासिद खलीफाओं की ताकत कमजोर पड़ने के साथ इस्लामी दुनिया पर उनका नियंत्रण बस **फरमान** जारी करने तक ही सीमित और नाम मात्र का रह गया। इसके फलस्वरूप दसवीं शताब्दी में कई छोटे-छोटे स्वाधीन राज्य उठ खड़े हुए : जाहिरीद, सफविद, बुवाईहीद, करा-खानीद और समानीद।

समानीद गवर्नर और तुर्की मूल के गुलाम अलप्तगीन ने गज़ना में एक स्वाधीन राज्य की स्थापना की। गज़नवी राज्य महमूद गज़नवी (998-1030 ई०) के समय में मशहूर हुआ। उसके शासन के तहत ईरानी प्रभाव अपने चरम पर पहुंच गया। महमूद अपने आपको ईरानी काल्पनिक नायक अफरासियाब का वंशज होने का दावा करता था। इस प्रक्रिया ने तुर्कों का पूरी तौर पर इस्लामीकरण और ईरानीकरण कर दिया। महमूद ने भारत में भी बारंबार हमले किये। इसके परिणामस्वरूप, पंजाब गज़नवी साम्राज्य का एक हिस्सा बन गया।

महमूद की मृत्यु के बाद शक्तिशाली सैलजुक उभरे। उन्होंने जल्दी ही ईरान, सीरिया और ट्रांस ऑक्सियाना पर कब्जा कर लिया। इन घटनाओं से गज़नवी ताकत को गहरा धक्का लगा जो गज़ना और पंजाब के हिस्सों तक सीमित होकर रह गयी।

बारहवीं शताब्दी में, सैलजुकों की ताकत को तुर्की कबीलों के एक गुट ने नष्ट कर दिया। सैलजुकों के नष्ट होने से जो शून्य बना उसने ईरान में ख्वारिज़्मी और उत्तर-पश्चिम अफगानिस्तान में गौर शक्ति को जन्म दिया। गौर गज़ना के सामंत थे। दूसरी ओर, ख्वारिज़्मी

शासकों की शुरुआत शानदार रही, उन्होंने गज़नी और लगभग समूचे मध्य एशिया और ईरान को अपने अधिकार क्षेत्र में ले लिया। इन परिस्थितियों में गौरियों के लिये ख्वारिज़्मी ताकत की कीमत पर विस्तार करना संभव नहीं था। भारत ही एक संभावी दिशा बची थी। विस्तार की इस प्रक्रिया की शुरुआत बारहवीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में हुई।

13.6 मंगोल

तेरहवीं शताब्दी के प्रारंभिक दशकों में एशिया और यूरोप ने पूर्व की ओर से आने वाले खानाबदोश विजेताओं की एक नयी लहर देखी। यह आक्रमण इतिहास में ज्ञात पहले के किसी भी आक्रमण से कहीं अधिक ज़बरदस्त और विनाशकारी था। ये नये आक्रमणकारी मंगोल थे, जिन्हें उस महान् साम्राज्य के लिये सबसे अधिक जाना जाता है जिसका गठन उन्होंने चंगेज़ ख़ाँ के नेतृत्व में किया। तेरहवीं शताब्दी का अंत होते होते, मंगोल साम्राज्य ज्ञात दुनिया के एक बड़े हिस्से पर फैल चुका था : चीन, मंचूरिया, कोरिया, उत्तरी वियतनाम, तिब्बत, तुर्किस्तान, अफगानिस्तान, ईरान, मैसोपोटेमिया, दक्षिणी रूस और साइबेरिया।

विश्व पर राज्य करने से पहले, मंगोल चीन के उत्तर और बैकल झील के पूर्व के घासस्थलीय क्षेत्र के रहने वाले थे। उनके पूर्व में उनकी जैसी ही एक कौम, तातार, रहती थी, जो शायद मंगोली तुर्क थे, जिन्होंने तारतारस (नर्क के लिये यूनानी शब्द) से जोड़ते हुए, यूरोपीय साहित्य में मंगोलों को "तातार" का नाम दे दिया था। मंगोलों के पश्चिम में कैराइट और नमन रहते थे, ये भी तुर्की मूल और बोली के लोग थे। ये सभी लोग विकास के विभिन्न चरणों में थे, जो अलग-अलग अंशों में पशु-पालन को मछली मारने और शिकार करने के साथ मिला रहे थे।

मंगोलों का एक शक्ति के रूप में उदय घासस्थलों के पुराने इतिहास से मेल खाता लगता है। खानाबदोशों के गिरोहों के बीच लंबे समय तक चलने वाले टकराव से एक असाधारण योग्यता वाला नेता उभर कर आता था जो लड़ने वाले झुंडों के बीच मतभेदों को समाप्त कर उन्हें ताकतवर संगठित शक्ति के रूप में जोड़ देता था। छोटे और बंटे हुए खानाबदोशों के गुट या तो अपनी मर्जी से या फिर जबरन इस संगठन में शामिल कर लिये जाते थे। इसके बाद के चरणों में ये खानाबदोश आक्रामक होकर अपने आसपास के स्थायी आवास वाले समाजों पर टूट पड़ते थे।

13.6.1 चंगेज़ ख़ाँ और स्टेप्स के (घासस्थलीय) कुलीनतंत्र

चंगेज़ ख़ाँ ने मंगोलों को एक गज़ब की आक्रामक ताकत बना दिया। चंगेज़ ख़ाँ का जन्म बारहवीं शताब्दी के सातवें दशक में एक शक्तिशाली मंगोल सरदार के यहाँ हुआ था। उसका प्रारंभ का नाम तेमुचिन था। घासस्थलों के अंदर तीन दशकों के कड़े संघर्ष के बाद चंगेज़ ख़ाँ अंत में मंगोलों के एक श्रेष्ठ नेता के रूप में उभर कर आया। इस दौरान उसने एक योद्धा और एक ऐसे शातिर कूटनीतिज्ञ के रूप में अपने आपको माहिर किया जो अपने शत्रुओं में फूट डालने और उन्हें फंसाने में निपुण था।

चंगेज़ ख़ाँ की सेना और उसकी शाही सरकार की धुरी सावधानी से चुने गये गार्डों (**बहादुर**) की एक टुकड़ी थी। मंगोल सेना की टुकड़ियों को इसी गार्ड टुकड़ी के सेनापतियों के अधीन रखा जाता था। सैन्य संगठन चंगेज़ ख़ाँ के समय अपने चरम पर पहुँचा। एक सुस्थापित खानाबदोशी परंपरा का इस्तेमाल करते हुए, उसने तमाम वयस्क पुरुषों को "**मिनगान**" (दस हजार की टुकड़ियों) में भर्ती कर लिया। **मिनगानों** को फिर दस-दस और सौ-सौ की और छोटी-छोटी टुकड़ियों में बाँटा जाता था। दस **मिनगानों** का एक **तुमान** बनता था जिन्हें बड़े स्तर के अभियानों में लगाया जाता था। इनमें से हरेक टुकड़ी एक सेनापति के अधीन होती थी जिसकी योग्यता चंगेज़ ख़ाँ खुद परखता था। सेनापति का अधिकार सैनिकों और उनके परिवारों पर होता था। इस तरह, प्रशासनिक नियंत्रण और सैन्य संगठन एक ही तंत्र के अंग थे।

13.6.2 विजयें और विस्तार

चंगेज़ ख़ाँ के पहले सैनिक प्रयास पूर्वी घासस्थलों के चरागाही कबीलों को अपने झंडे तले लाने को समर्पित थे। अब तेमुचिन का शासन मंगोल, तुर्की और मंचूरियाई कबीलों के एक विशाल संघ पर था। वह उनके तमाम **किबितकी** (तंबुओं) का मुखिया था और उसके परिवार के पास जीते हुए पशुओं का स्वामित्व पैतृक रूप में होता था।

सन् 1206 में संपन्न हुई एक "**करूलताई**" (खानाबदोश सरदारों की बैठक) में, तेमुचिन को "समस्त मंगोलिया का **कगान**" घोषित किया गया, और उसे चंगेज़ खाँ की पदवी मिली।

आंतरिक रूप से मजबूत होने के बाद, मंगोल मंगोलिया की सीमा से बाहर निकल पड़े। 1211 ई० में शुरू होने वाले सालाना अभियानों की एक शृंखला के अंत में उन्होंने चीन की बड़ी दीवार को पार कर लिया और पीकिंग पर कब्ज़ा कर लिया। जल्दी ही, उनका ध्यान ट्रांस ऑक्सियाना और खुरासान की ओर गया जो ख्वारिज़्म शाह के राज्य थे। ख्वारिज़्म साम्राज्य की सुरक्षा तो मंगोलों की कब्जा करने की कला के आगे ध्वस्त हो गयी। मंगोलों ने दीवारों, फाटकों को तोड़ने वाली मशीनों (बैटरिंग रैम), लपटें उगलने वाली मशीनों (जिसमें **नेफ्था** प्रयुक्त किया जाता था), पत्थर फेंकने वाली मशीनों या गुलेलों (**मनजनीक़**) आदि का इस्तेमाल किया। बुखारा और समरकंद का पतन 1220 में भयंकर नरसंहार के बीच हुआ। बुखारा की स्थिति का वर्णन करते हुए एक प्रत्यक्षदर्शी ने कहा : "वे आये, उन्होंने बर्बाद किया, उन्होंने जलाया, उन्होंने मारकाट की, उन्होंने लूटा, वे चले गये।"

1. मंजनीक

मंगोलों को ट्रांस ऑक्सियाना और खुरासान को अपने साम्राज्य में मिलाने में कोई तीन साल 1219-22, लगे थे। 1227 में, मंगोलिया लौटते समय, चंगेज़ खाँ की मृत्यु हो गयी। उस समय तक पूरा उत्तरी चीन उसके साम्राज्य में मिलाया जा चुका था। उसकी मृत्यु के पश्चात् साम्राज्य का बंटवारा उसके बेटों में हो गया। उसके तीसरे बेटे, ओगेदई, को 1229 में महान् खान घोषित किया गया। उस समय तक अविजित यूरेशियाई घासस्थल जोची के हिस्से में गये। दूसरे बेटे, चगताई, को तुर्किस्तान मिला, और उसके सबसे छोटे बेटे तोलुई को अपनी मातृभूमि मंगोलिया का प्रदेश मिला।

चंगेज़ खाँ के एक उत्तराधिकारी, हलागू, ने 1258 ई० में बगदाद पर आक्रमण कर दिया। यह शहर अब्बासिदों की राजधानी था जो खून और आग की लपटों में नष्ट हो गया। एक संतुलित आकलन के अनुसार कोई 800,000 लोगों को वहशी तरीके से मार डाला गया। अब्बासिद खलीफा का अंत भी हिंसक हुआ। अंत में मंगोलों की जीतों से चार महान् साम्राज्य निकले : सुनहले झुंड (**गोल्डन होर्ड**) ने वोल्गा के घासस्थल और दक्षिणी रूस पर राज्य किया, **इलखानों**

का अफगानिस्तान और ईरान पर कब्जा रहा, **चगताई** साम्राज्य में अधिकांश मध्य एशिया रहा, और, **कुबलई खाँ** का साम्राज्य जिसने चीन और पड़ोसी क्षेत्रों पर राज्य किया। ये साम्राज्य पंद्रहवीं शताब्दी तक बने रहे।

बोध प्रश्न 3

1) तुर्क अरब खिलाफत के मामलों में कैसे शामिल हुए?

2) चंगेज़ खाँ का उदय शक्तिशाली शासक के रूप में कैसे हुआ?

3) मंगोलिया के बाहर चंगेज़ खाँ की विजयों का संक्षिप्त विवरण कीजिए।

13.7 सारांश

आशा है कि इस इकाई से आपको 10-13वीं शताब्दी के दौरान मध्य एशिया में हुए घटनाक्रमों की सामान्य जानकारी प्राप्त हुई होगी। अब आपके पास मध्य एशिया की भौगोलिक विशेषताओं की भी संक्षिप्त जानकारी है। आपको चरागाही खानाबदोशों की प्रकृति के बारे में भी सीखने को मिला। कुछ समय में, मुख्य तौर पर खानाबदोश आदिवासी तुर्कों ने शक्तिशाली राज्य कायम कर लिये। हमने चंगेज़ खाँ के नेतृत्व में मंगोल शक्ति के सुदृढ़ होने, और मध्य एशिया में मंगोलों के प्रसार पर भी चर्चा की। अगली इकाई में हम तुर्कों के भारत की ओर विस्तार और उनके द्वारा दिल्ली सल्तनत की स्थापना का विवरण देंगे।

13.8 शब्दावली

खानाबदोश : एक ऐसा जनसमूह जिसके पास स्थायी आवास नहीं होता।

यूरेशियन घासस्थल : यूरोप और एशिया की सीमाओं पर का एक भौगोलिक क्षेत्र (घास के मैदान)।

कुषाण साम्राज्य : यह साम्राज्य भारत के उत्तर-पश्चिमी भाग में रहा, और इसने पहली शताब्दी के मध्य से तीसरी शताब्दी के अंत तक राज्य किया।

स्थल-रूद्ध क्षेत्र : एक ऐसा भौगोलिक क्षेत्र जिसका सागर से कोई संपर्क नहीं होता।

शाहनामा : फिरदौसी द्वारा लिखित फारसी का महाकाव्य (10वीं शताब्दी)।

बाइज़ेंटियम : इस्तांबूल का प्राचीन नाम।

सिल्क मार्ग : चीन से प्रारंभ होने वाला भूभाग जो भारत की उत्तर-पश्चिमी सीमा छूता हुआ मध्य एशिया व रूस होकर बाल्टिक तक पहुंचता है।

उमय्यद : खलीफाओं का वंश जिन्होंने 661 ई० से 750 ई० तक शासन किया।

तातार : एक खानाबदोश कबीला।

13.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखिये भाग 13.2
2) देखिये उपभाग 13.2.2
3) देखिये उपभाग 13.2.2

बोध प्रश्न 2

1) देखिये भाग 13.4
2) देखिये उपभाग 13.4.1
3) देखिये उपभाग 13.4.2

बोध प्रश्न 3

1) देखिये भाग 13.5
2) देखिये उपभाग 13.6.1
3) देखिये उपभाग 13.6.2